Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 1 – 2018

भारत केन्द्रित शिक्षा एवं उसकी प्रतिस्थापना में शिक्षक की भूमिका

राघवेन्द्र मालवीय*

भारतीय संस्कृति का एक सूच वाक्य प्रचलित है, "तमसो मॉ ज्योतिर्गमय", इसका अर्थ है, अंधेरे से उजाले की ओर जाना। इस प्रकिया को वास्तविक अर्थ में पूरा करने के लिए शिक्षा, शिक्षक और समाज तीनों की बड़ी भूमिका होती है। भारतीय समाज शिक्षा और संस्कृति के मामले में प्राचीनकाल से ही बहुत समृद्ध रहा है। भारतीय समाज में जहॉ शिक्षा को शरीर, मन और आत्मा के विकास का साधन माना गया है, वहीं शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में हम शिक्षा के स्थान और उसकी भूमिका को भी निरन्तर विकासशील पाते हैं। महर्षि दयानन्द ने एक बार शिक्षकों के सम्बन्ध में कहा था कि "शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींचकर उन्हें शक्ति में निर्मित करते हैं।" महर्षि अरविन्द का मानना था कि किसी राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस राष्ट्र के शिक्षक होते हैं। इस प्रकार एक विकसित, समृद्ध एवं हर्षित राष्ट्र व विश्व के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है।

शिक्षा का केन्द्रीय घटक विद्यार्थी होता है और उन्हें सही दिशा निर्देशन करने वाला प्रमुख घटक शिक्षक होता है। शिक्षा के अनेक उद्देश्यों की पूर्ति शिक्षकों के माध्यम से होती है। अतः उन्हें प्रशिक्षिक किया जाता है, उनकी सुविधा असुविधा का ध्यान रखा जाता है। समाज का उनके प्रति कर्तव्य है और उनका भी समाज के प्रति उत्तरदायित्व रहता है। शिक्षक अपने दायित्वों का निर्वाह भलीभॉति करने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। शिक्षा में शिक्षक ही सामाजिक विकास का सूत्र होते हैं। वास्तव में किसी समाज की आशा, अभिलाशा, आकांक्षा, आवश्यकता, अपेक्षा और आदर्शों को सफल बनाने का कार्य शिक्षक ही कर सकते हैं।

भारत के महान शिक्षाविद् डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जब सन् 1962 में देश के राष्ट्रपति के रूप में पदासीन हुए तो उनके चाहने वालों ने उनके जन्म दिन को "शिक्षक दिवस" के रूप में मनाने की अपनी इच्छा उनके समक्ष प्रकट की। इस पर उन्होंने स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हुए अपनी अनुभूति प्रदान की और तब से लेकर आज तक 5 सितम्बर की "शिक्षक दिवस" के रूप में उनका जन्मदिन मनाया जाता है। डा0 राधाकृष्णन ने शिक्षा को एक मिशन के रूप में देखा और उनके अनुसार शिक्षक होने का अधिकारी वहीं व्यक्ति है, जो अन्य जनों से अत्यधिक बुद्धिमान और विनम्र हो। उनका कहना था कि उत्तम अध्यापन के साथ साथ शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार व स्नेह उसे एक सुयोग्य शिक्षक बनाता है। मात्र शिक्षक होने से कोई योग्य नहीं हो जाता बल्कि यह गुण उसे अर्जित करना होता है। शिक्षा मात्र ज्ञान को सूचित कर देना नहीं होती वरन् इसका उद्देश्य एक उत्तरदायी नागरिक का निर्माण करना है।

*जे.आर.एफ., शिक्षाशास्त्र, शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा संकाय, नेहरू ग्राम भारती डीम्ड टू बी. यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-4044**

शिक्षा के मन्दिर कहे जाने वाले विद्यालय निश्चित ही ज्ञान के शोध केन्द्र हैं, संस्कृति के तीर्थ एवं स्वतंत्रता के संवाहक होते हैं। ऐसा माना जाता है कि यदि जीवन में शिक्षक नहीं है तो शिक्षण सम्भव नहीं है। शिक्षण का शाब्दिक सदैव पूजनीय रहे हैं क्योंकि उन्हें गुरू कहा जाता है। परन्तु वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप में आ रहे परिवर्तनों से शिक्षक अछूते नहीं हैं। यह शोचनीय विषय बनता जा रहा है कि आज के शिक्षकों में भी आत्मविवेचन की महती आवश्यकता है। उनकों नवीन शिक्षण पद्धतियों, सूचना प्रौद्योगिकियों एवं 21वीं सदी के बदल रहे शिक्षाशास्त्र में समायोजन बिठाना होगा।

भारतीय समाज में प्रत्येक घर तक शिक्षा को पहुंचाने के भागीरथी सरकारी प्रयासों के साथ– साथ शिक्षकों की मनःस्थिति का विष्लेशण भी उतना ही अनिवार्य होना चाहिए। शिक्षकों को भी वह सम्मान मिलना चाहिए, जिसके वे अधिकारी हैं। शिक्षक, शिक्षा (ज्ञान) और विद्यार्थी के बीच एक सेतु का कार्य करता है और यदि यह सेतु ही निर्बल होगा तो समाज को खोखला होने में देरी नहीं लगेगी। आज प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा की आधारभूत संरचना व प्रवीण व सुयोग्य शिक्षकों की भर्ती पर सर्वाधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

एक समर्पित और निष्ठावान शिक्षक ही देश की शिक्षा प्रणाली को सुन्दर व सुदृढ़ बना सकता है। इसके लिए समाज को भी शिक्षकों को एक सम्मानजनक स्थान देना होगा। जिससे 21वीं सदी के ज्ञानोंन्मुख समाज के लिए हम उनकों सही ढंग से प्रशिक्षित और प्रेरित कर पायेंगे। तभी एक ऐसे भारत के निर्माण की ईमानदार कोशिश हो सकेगी जो निरक्षरता, भ्रश्टाचार, गरीबी, भुखमरी व मूल्यों में निरन्तर पतन जैसे कलंकों से मुक्त होगा और जहॉ शिक्षा का तात्पर्य मात्र धन ऐश्वर्य का अर्जन न होकर, देश के प्रति सच्चा भाव और सद्भाव भी होगा।

इन दिनों विशेष उपलब्धियों के लिए अध्यापकों को हम सम्मानित करते हैं, उससे अन्य अध्यापक भी प्रेरणा लेते हैं। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता है जो अपने विद्यार्थियों की शिक्षा के माध्यम से जीवन में व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी जिज्ञासा होती है, जो वे जानना चाहते हैं, उन सबके लिए वे अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से ज्ञान का भण्डार (एन्साक्लोपीजिया) है। छात्रों को जो भी कठिनाई होती है किसी भी विषय को लेकर वह उसका समाधान इस ज्ञान रूपी मुख या अध्यापक से प्राप्त करता है। वह एक ज्ञान पुंज है। जिसके पास प्रश्नों के उत्तर हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधियों को प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा 21वीं सदी में दुनियां काफी सुन्दर हो जायेगी।

वर्तमान समय में शिक्षा का अर्थ मात्र पुस्तकीय ज्ञान और एक अच्छी सी नौकरी मिल जाना रह गया है। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूजनीय रहा है। कोई उसे गुरू कहता है, कोई शिक्षक कहता है, कोई आचार्य कहता है, तो कोई अध्यापक या टीचर कहता है ये सभी शब्द एक व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनों में कहा जाय तो शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है। शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता है। तभी तो शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

माता–पिता बच्चे को जन्म देते हैं। उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नहीं उतार सकते, लेकिन शिक्षक ही है जिन्हें हमारी भारतीय संस्कृति में माता–पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है। इसलिए ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है। गुरू या शिक्षक का सम्बन्ध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है और उसका हाथ थामने के लिए हमेशा तैयार रहता है। विद्यार्थी के मन में उमड़े हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है और उसका हाथ थामने के लिए तैयार और तत्पर रहता है। विद्यार्थी के मन में उमड़े हर सवाल का जवाब देता है और विद्यार्थी का सही सुझाव देता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करता है।

एक शिक्षक या गुरू द्वारा अपने विद्यार्थी को स्कूल में जो सिखाया जाता है या जैसा वो सीखता है वे वैसा ही व्यवहार करते हैं। उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बन जाती है जैसा वह अपने आसपास होता देखते हैं। इसलिए एक शिक्षक या गुरू ही अपने विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है जो हमें गुरू द्वारा प्रदान की जाती है। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहाँ पर शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ–साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देते हैं, जो कि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। जब अमेरिका जैसे शक्तिशाली देष का राष्ट्रपति आता है तो वह भी भारत की गुणवत्तायुक्त शिक्षा की तारीफ करता है।

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी है तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहां की प्रतिभा दब कर रह जायेगी। बेशक किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो, लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं, जो किसी भी देश के विकास में शिक्षा के महत्व को अधोरेखांकित करते हैं।

एक शिक्षक द्वारा दी गयी शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। शिक्षकों द्वारा आरम्भ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहारकुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वरतुल्य माना जाता है। आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श मानव समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ–साथ ऐसे भी शिक्षक हैं जो शिक्षक और शिक्षा के नाम को कलंकित कर रहे हैं, ऐसे शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है, जिससे एक निर्धन शिक्षार्थी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है और धन के अभाव से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वूर्ण है। शिक्षक वह पर्थ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है।

आज के समय में शिक्षा का व्यावसायीकरण और बाजारीकरण हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती है। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धन्धा नहीं थी। गुरू एवं शिक्षक ही वो है जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह बालक में पड़ी अभिप्रेरणा की जागृति कर दे। जिससे उसका सर्वांगीण

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

विकास हो सके। शिक्षक का अहम (परम्) ध्येय युवा मस्तिष्क को तेजस्वी बनाना है। तेजस्वी युवा धरती पर, धरती के नीचे और ऊपर आसमान में सबसे सशक्त संसाधन है। शिक्षक की भूमिका उसी सीढ़ी जैसी है जिसके जरिए लोग जीवन की ऊँचाइयों को छूते हैं लेकिन सीढ़ी वही की वही रहती है। सांप और सीढ़ी के खेल की भाँति, सीढ़ी एक व्यक्ति को सापों के लोक तक पहुँचा सकती है और असीमित सफलताओं की दुनिया तक भी। ऐसा उदार है इस पेशे का स्वभाव।

हमारे समाज में और एक बच्चे के जीवन में एक शिक्षक का स्थान माता–पिता के बाद, लेकिन ईश्वर से पहले आता है। माता–पिता, गुरू और फिर ईश्वर। ऐसी महत्ता मेरी जानकारी में, दुनिया में किसी और पेशे की नहीं है कि वह समाज के लिए शिक्षक से बढ़कर महत्वपूर्ण हो। आये दिन यह आरोप शिक्षक पर लगाया जाता है कि शिक्षक अपने कार्यों का निर्वहन सुचारू और भली प्रकार से नहीं कर पा रहा है। लेकिन यह विचार कोई नहीं करता कि उसे पढ़ाने क्यों नहीं दिया जाता? आए दिन गैर शैक्षिक कार्यों में इस्तेमाल करता प्रशासन, शिक्षकों की शैक्षिक सोंच को, शैक्षिक कार्यक्रमों को पूरी तरह ध्वस्त कर देता है। बच्चों को पढ़ाना सिखाना सरल नहीं होता और न ही बच्चे फाइल होते हैं। प्रशासनिक कार्यालय और अधिकारीगण शिक्षा और शिक्षकों की लगातार उपेक्षा करते हैं। उन्हें काम भी नहीं करने देते। इसीलिए स्कूली शिक्षा में अपेक्षित सुधार सम्भव नहीं हो पा रहा है।

कभी–कभी आभास होता है कि शिक्षा निरन्तर बदल रही है। व्यवसायिक नीतियों के कारण भारतीय समाज में शिक्षक अन्याय व अत्याचार के शिकार हो रहे हैं। जहाँ ये माना जाता था कि विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान देने के अलावा उनको उनकी सामाजिक जीवन से सम्बन्धित ज्ञान की प्राप्ति कराना तथा समाज में योगदान देने के लिए समर्थ बनाना शिक्षक का ही दायित्व होता है। वही शिक्षक स्वयं को सामाजिक शोशण, दबाव, भय आदि से घिरा हुआ अनुभव करता है। वास्तव में इन गम्भीर सामाजिक परिस्थितियों ने शिक्षकों की भूमिका और दायित्वों को प्रभावित किया है। अतः वे अब अपने उत्तर दायित्वों से पलायन करने लगे हैं। यद्यपि इस स्थिति के लिए समाज, शिक्षा व्यवस्था और वे स्वयं जिम्मेदार हैं। स्वामी विवेकानन्द जी का मानना था कि भारत में ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे समाज के चरित्र का निर्माण हो। मन की शक्ति में वृद्धि हो, बुद्धि का विस्तार हो और जिसमें व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। वास्तविक शिक्षा वह नहीं होती जो कक्षा में शिक्षक के व्याख्यान से शुरू होती है और उसी पर समाप्त हो जाती है। वर्तमान में बदल रहे शिक्षकीय मूल्यों को दृष्टिगत रखते हुए एक ऐसी सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है, जिसमें विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता हो, जिसमें विद्यार्थी अधिक से अधिक प्रश्न पूछे, जिनके सटीक उत्तर के लिए शिक्षकों को भी उतना ही अधिक अध्ययन व चिन्तन करना पड़े। सर्वश्रेष्ठ शिक्षक वहीं है जो जीवन पर्यन्त स्वयं विद्यार्थी बना रहता है और इस प्रक्रिया में वह पुस्तकों के साथ–साथ अपने विद्यार्थियों से भी बहुत कुछ सीखता है।

भारतीय समाज में शिक्षकों की बदल रही छवि को हमारे साहित्य और फिल्मों में शिक्षक पात्रों के चरित्र चित्रण के माध्यम से सरलता से समझा जाता है। 20वीं सदी में प्रेमचन्द्र, शरद्चन्द्र, बंकिमचन्द्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि ने अपनी रचनाओं में शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता और एक आदर्श नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन फिल्मों के माध्यम से देश के लिए कर्मठ व निष्ठावान भावी पीढ़ी तैयार करने वाले शिक्षक पात्र भारतीय युवाओं को एक अत्यन्त मूल्यवान संदेश देते थे जिसमें हमारे शास्वत मूल्यों

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

यथा न्याय, समानता, भाईचारा और सामाजिक सद्भाव को अक्षुण्य बनाये रखने की प्रेरणा हुआ करती थी। लेकिन पिछले कुछ दशकों से भारतीय सिनेमा में शिक्षकों को एक हास्यास्पद चरित्र के रूप में प्रदर्षित किया जाने लगा है, जो विद्यार्थियों की मानसिकता से बिल्कुल कटे हुए दिखाए जाते हैं। कुछ फिल्में जैसे–थ्री–इडियट्स, मुन्नाभाई एम0बी0बी0एस0 और ग्रैण्ड मस्ती में प्रिंसिपल को निश्चित रूप से एक नकारात्मक चरित्र के रूप में पेश किया गया है। किसी शिक्षक प्रिंसिपल या कुलपति की सकारात्मक भूमिका दिखाने वाली फिल्में जैसे मानों समाप्त ही हो गई हैं। ऐसा भी हो सकता है कि कहीं न कहीं फिल्में भारतीय समाज में शिक्षकों के प्रति कम हो रहे सम्मान को दिखाती हैं।

भारतीय समाज में आज शिक्षा से सम्बद्ध समस्याओं ने विराट रूप धारण कर लिया है, जिनका स्थायी समाधान अब सरकार शिक्षक और समाज के संयुक्त एवं दीर्घकालीन प्रयासों से भी सम्भव हो सकता है या हो सकेगा। आज जो चुनौतियाँ भारतीय शिक्षा के समक्ष विकराल मुँह धारण किए आई हैं, उनकी जड़े बहुत गहरी 60 और 70 के दशकों तक जाती हैं। अतः स्पष्ट है कि भारतीय समाज और सरकार द्वारा शिक्षकों की भूमिका की नए सिरे से मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044